32

''और उसने उनसे दृष्टांतों में बहुत सी बातें कहीं''

बाइबल पाठ #12

V. दूसरे से तीसरे फसह तक (क्रमशः)।

ण. दृष्टांतों का पहला बड़ा समूह।

1. अवसर व स्थिति (मत्ती 13:1-3; मरकुस 4:1, 2; लूका 8:4)।
2. बीज बोने वाले का दृष्टांत-और उसकी व्याख्या (मत्ती 13:3-23; मरकुस 4:3-25; लूका 8:5-18)।
3. उगने वाले बीज का दृष्टांत (मत्ती 4:26-29)।
4. जंगली बीज का दृष्टांत (मत्ती 13:24-30)।
5. राई के बीज और खमीर के दृष्टांत (मत्ती 13:31-35; मरकुस 4:30-34)।
6. जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या (मत्ती 13:36-43)।
7. खजाने और मोती के दृष्टांत (मत्ती 13:44-46)।
8. जाल का दृष्टांत (मत्ती 13:47-53)।

परिचय

पिछले पाठ में हमने एक समीक्षा आरम्भ की थी, जिसे ''व्यस्त दिन'' कहा गया है। उस दिन की प्रमुख घटना फरीसियों का यह आरोप था कि यीशु शैतान की सामर्थ से दुष्ट आत्माओं को निकालता है। इसके बाद का उनका सामना करना मसीह की सेवकाई का संधिकाल या टर्निंग प्वायंट था। इसका एक परिणाम यह हुआ कि यीशु ने प्रचार का अपना ढंग बदल लिया। इसके बाद वह अधिकतर दृष्टांतों में संदेश देने लगा (मत्ती 13:34, 35; मरकुस 4:33, 34)। अगला परिणाम मसीह के गलील की झील के पार जाने की पहली लिखित घटना है (मरकुस 4:33, 35)। अगले पाठ में हम जल यात्रा के बारे में अध्ययन करेंगे। उस में हम प्रभु के ''दृष्टांतों के पहले बड़े समूह''[1] पर ध्यान केन्द्रित रखेंगे।

पिछला पाठ यीशु की माता तथा उसके भाइयों के उससे मिलने आने की कहानी के साथ समाप्त हुआ था (मत्ती 12:46-50)। उसके बाद, मसीह उस घर को, जहां वह सिखाया करता था, छोड़ कर अपनी एक पसन्दीदा जगह, गलील की झील के किनारे पर

चला गया (मत्ती 13:1; मरकुस 4:1)। स्थान अलग हो सकता है, परन्तु संदेश नहीं, अर्थात इसमें कहानियों की एक शृंखला है, जिनमें से कुछ कहानियां छोटी हैं और कुछ बहुत छोटी। ''और उसने उनसे, दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं'' (मत्ती 13:3क; देखें मरकुस 4:2क)। सामान्य की तरह, लोग उसकी सुनने के लिए हर ओर से आए थे (लूका 8:4), और एक बार फिर उसे किनारे पर खड़ी भीड़ को वचन सुनाने के लिए किश्ती पर से ही बोलना पड़ा (मत्ती 13:2; मरकुस 4:1)।

पहले यीशु दृष्टांतों से समझाता था। पहाड़ी उपदेश के लूका के वृत्तांत में, कहा गया है कि मसीह ने अन्धे द्वारा अन्धे को रास्ता दिखाने का ''दृष्टांत कहा'' (लूका 6:39)। अपनी शिक्षा को समझाने के लिए दृष्टांतों का इस्तेमाल करने के बजाय, दृष्टांत ही उसकी शिक्षा के ढंग बन गए। शमौन के घर खाना खाने के बाद उसने दो देनदारों का दृष्टांत दिया था (लूका 7:41, 42)।[2] बहुत से लोग सात दुष्टात्माओं के उसके उदाहरण को दृष्टांत की श्रेणी में रखते हैं (लूका 11:24-26)।[3] इस अवसर का अन्तर अलग बात द्वारा मसीह के दृष्टातों का व्यापक और विशेष उपयोग करने में था। मत्ती ने लिखा है ''ये सब बातें यीशु ने दृष्टांतों में लोगों से कहीं। और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था''[4] (मत्ती 13:34; देखें मरकुस 4:33, 34)। अपनी शिक्षा को समझाने के लिए दृष्टांत का इस्तेमाल करने के बजाय, दृष्टांत ही उसके सिखाने का ढंग बन गए।

यीशु की शेष सेवकाई में दृष्टांत बहुत महत्वपूर्ण हो गए थे, इसलिए हमारा दृष्टांतों पर सामान्य चर्चा करना आवश्यक है। फिर हम ''व्यस्त दिन'' पर मसीह के कहे दस या इससे अधिक दृष्टांत देखेंगे।

दृष्टांत: एक व्याख्या (मत्ती 13:10-17; मरकुस 4:10-13, 21-25; लूका 8:9, 10, 16-18)

दृष्टांतों का इस्तेमाल केवल यीशु ने ही नहीं किया था। दृष्टांत पुराने नियम के वक्ताओं के दिलो दिमाग पर छाए हुए थे (भजन संहिता 78:2;[5] यहेजकेल 17:2; 20:49; 24:3; होशे 12:10)। तो भी मसीह ही ''दृष्टांतों का इस्तेमाल करने वाला इतिहास का एकमात्र शिक्षक है।''[6] दृष्टांतों का उल्लेख होने पर, स्वाभाविक ही हमारा ध्यान मसीह की ओर चला जाता है।

एफ. लेगर्ड स्मिथ ने लिखा है, ''महान शिक्षक होने के नाते, यीशु अपने चेलों को निर्देश देने के लिए कई ढंगों का इस्तेमाल करता है। ... परन्तु, उसके सब ढंगों से, सिखाने का उसका सबसे दिलचस्प और विलक्षण ढंग शायद दृष्टांतों का इस्तेमाल है।''[7] एच. आई. हेस्टर ने कहा है, ''यीशु के दृष्टांतों की साहित्यिक सुन्दरता अतुलनीय है: 'सहजता, सूक्ष्मता, जन भावना तथा आत्मिक गहनता के साथ, वे संसार की सबसे सुन्दर साहित्यिक कला हैं।''[8]

दृष्टांत: ज़्या हैं?

''दृष्टांत'' के लिए अंग्रेजी का ''parable'' शब्द मिश्रित यूनानी शब्द (*parabole*) से निकला है, जो यूनानी उपसर्ग को जिसका अर्थ ''के साथ'' (*para*) ''फैंकना''

(*ballo*) के अर्थ वाला संज्ञा रूप शज़्द के साथ मिलाता है। इसका मूल अर्थ है ''के साथ फैंका गया।'' इसका सज़्बन्ध ''समानांतर'' शज़्द से है, जिसे दो समानांतर रेखाएं खींच कर समझाया जा सकता है:

दृष्टांत में, कोई कथन या कहानी (कही गई) किसी आत्मिक सच्चाई (सामान्यतया अनकही) के ''साथ-साथ फैंकी'' जाती थी। कथन या कहानी सामान्यतया देखने में साधारण होती थी, परन्तु इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण अर्थात गहरी सच्चाई बताना होता था। समानांतरवाद को इस प्रकार समझाया जा सकता है:

कहा गया वाज़्य या कहानी

अनकही आत्मिक सच्चाई

हरमिन्युटिज़्स[9] की कुछ किताबों में दृष्टांत का तकनीकी अर्थात ''एक विस्तृत उपमा'' दिया जाता है।[10] उपमा जिसे अंग्रेजी में simile कहा जाता है (का उच्चारण ''SIM-uh-lee'') अलंकार की भाषा है, जो सामान्यतया ''जैसा'' या ''की तरह'' शज़्द के साथ तुलना करता है। ''लोमड़ी जैसा चालाक'' और ''चुकंदर जैसा लाल'' उपमाएं हैं। कुछ दृष्टांत इस परिभाषा में फिट बैठते हैं; परन्तु नए नियम में ये शज़्द यहां तक ही सीमित नहीं हैं। कुछ दृष्टांतों में ''के समान'' या इसके जैसा कुछ मिलता है (मज़ी 13:31, 33, 44, 45), पर पूरा नहीं (मज़ी 13:3; देखें लूका 7:41, 42)। इसके अलावा, कई बार शज़्द के किसी भी अर्थ में दृष्टांत ''बढ़ाया'' नहीं होता, बल्कि बहुत ही संक्षिप्त होता है (लूका 6:39)।

दृष्टांत को ''स्वर्गीय अर्थ वाली सांसारिक कहानी'' भी कहा जाता है। यह बात दयालु सामरी का दृष्टांत (लूका 10:30-37) और खोए हुए पुत्र का दृष्टांत (लूका 15:11-32) कुछ प्रसिद्ध दृष्टांतों पर लागू होती है, परन्तु कुछ दृष्टांतों को कहानियां कहना कठिन होगा (देखें लूका 6:39; 8:16)।

यीशु के दृष्टांतों की अलग-अलग सूचियों पर नज़र डालें तो आपको ऐसे पद मिल जाएंगे, जिनका उपमाओं, रूपकों या अन्य तुलनात्मक अलंकारों के रूप में वर्गीकरण किया जा सकता है। कई बार दृष्टांत ऐसे होते हैं, जिन्हें हम आम तौर पर उदाहरण कहते हैं।[11] लूका 4:23 में मसीह ने एक कहावत को दृष्टांत कहा।[12] इसलिए नए नियम के दृष्टांत को किसी अधिक या कम प्रसिद्ध स्थिति[13] और किसी अप्रसिद्ध आत्मिक सच्चाई की तुलना के रूप में मानना ही उचित होगा। प्रसिद्ध बात का आमतौर पर अधिकतर लोगों को पता होता था, जबकि अप्रसिद्ध या अनकही बात का अर्थ निकाला जाता था।

दृष्टांत: ज़्यों?

इस अवसर पर यीशु द्वारा दृष्टांतों का व्यापक इस्तेमाल करने से चेले हैरान रह गए। उसके दृष्टांत कह लेने के बाद, वे एकान्त में आकर उससे पूछने लगे, ''तू उनसे दृष्टान्तों में ज़्या बातें करता है?'' (मज़ी 13:10)। यीशु ने दृष्टांतों का इस्तेमाल ज़्यों *किया ?*

पहली बात, उसने खुले मन वाले लोगों पर सच्चाई प्रकट करने के लिए दृष्टांतों का इस्तेमाल किया। आम तौर पर जब हम दृष्टांतों के उद्देश्य पर विचार करते हैं तो पहले हम उनके सकारात्मक महत्व पर ध्यान देते हैं:

- दृष्टांत हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं: कहानी सुनना लगभग हर किसी को अच्छा लगता है।
- दृष्टांत हमारी सोच को एकाग्र करते हैं: वे हमें यह पूछने पर विवश करते हैं कि ''इसका ज़्या अर्थ है?''
- वे हमारी समझ को बढ़ाते हैं: उनसे संक्षिप्त सिद्धान्त मिलते हैं।
- दृष्टांत हमारी स्मरण शज़्ति को बढ़ाते हैं: उन्हें याद रखना आसान होता है।

दृष्टांत आत्मिक अवधारणाओं को समझने में हमारे सहायक होते हैं। नि:संदेह उनसे यीशु के चेलों को भी सहायता मिलती थी। मसीह ने बुद्धिमान शिक्षक की तुलना ऐसे व्यज़्ति से की, ''जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है'' (मज़ी 13:52)। दृष्टांत पुरानी सच्चाइयों को सिखाने का नया ढंग थे।

दूसरा, उसने बंद दिमाग वाले लोगों से सच्चाई को छुपाने के लिए दृष्टांतों का इस्तेमाल किया। जब यीशु के चेलों ने उससे पूछा कि वह दृष्टांतों में ज़्यों सिखाता है तो उसने इसके सकारात्मक पक्ष पर नहीं, बल्कि नकारात्मक पक्ष पर ध्यान केन्द्रित रखा। उसने कहा, ''मैं उनसे दृष्टातों में इसलिए बातें करता हूं, कि वे देखते हुए नहीं देखते; और सुनते हुए नहीं सुनते; और नहीं समझते'' (मज़ी 13:13)। उसने यशायाह को उद्धृत किया: ''ज़्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आंखें मूंद ली हैं ...'' (मज़ी 13:15; यशायाह 6:10 ज़ी देखें)।

इन बातों को पढ़ते हुए, संदर्भ को ध्यान में रखें: यीशु पर शैतान की सामर्थ से दुष्ट आत्माओं को निकालने का आरोप लगाकर फरीसियों ने दिखा दिया कि उनके मन ऐसे कठोर हैं कि उनकी मरज़्मत नहीं की जा सकती। यह स्पष्ट था कि उन्होंने यीशु की बातें सच्चाई को जानने के लिए नहीं, बल्कि उसे फंसाने का तरीका ढूंढ़ने के लिए सुनी थीं। ऐसे प्रतिकूल माहौल में, यीशु ''कहानियां'' सुनाने लगा, ऐसी कहानियां जो सीखने की इच्छा न रखने वालों को बेकार लगती थीं, परन्तु उन हृदयों को रोशन करने के लिए थीं, जो उनका अर्थ ढूंढ़ने के लिए समय देने को तैयार थे (मज़ी 13:16, 17)।

इस प्रकार दृष्टांतों ने निष्कपट मन तथा कठोर मन लोगों को अलग कर दिया। एक अर्थ में, वे बन्द दिमाग़ वाले लोगों का न्याय या उन पर दोष लगाने वाले थे।

दृष्टांत: कैसे?

मसीह की शिक्षा की सेवकाई के हमारे अध्ययन में दृष्टांतों का अधिक से अधिक योगदान रहेगा, इसलिए हमें उनकी व्याज़्या के ढंग के बारे में कुछ बातें कहनी आवश्यक हैं।

बाइबल के अलंकारों का अर्थ निकालने के तीन पग हैं: (1) अलंकार को समझना; (2) इससे जुड़ी बाइबल की सच्चाई को निर्धारित करना; (3) यह सुनिश्चित करना कि दोनों में साझा ज़्या है। दृष्टांतों के अध्ययन के लिए इन पगों का इस्तेमाल किया जा सकता है: (1) कहानी या यीशु द्वारा कही गई बात की पृष्ठभूमि को जानने के लिए आप जो कुछ कर सकते हैं, वह करें। (2) उसमें सिखाई जा रही मूल सच्चाई को निर्धारित करने का प्रयास करें। कभी-कभी, यीशु दृष्टांत विस्तार में भी समझा देता था (मज़ी 13:18-23, 36-43)। कभी-कभी उसने दृष्टांत की प्रासंगिकता भी बताई (लूका 7:42ख-47; 10:29, 36, 37; 12:40)। आम तौर पर संदर्भ से पता चल जाता है कि दृष्टांत में ज़्या संदेश देने की कोशिश की गई है (लूका 15:1-3; 18:1)। कई बार केवल मसीह के राज्य की सच्चाइयों का सामान्य ज्ञान ही सहायक हो सकता है। (3) अन्त में, यह देखने के लिए कि दृष्टांत उस मूल सच्चाई पर ज़्या प्रकाश डालता है, उस दृष्टांत और सच्चाई को आमने-सामने रखें।

तीसरे पग के संदर्भ में यह समझ आ जाना चाहिए कि आम तौर पर हर दृष्टांत में *एक मुज़्य सच्चाई* पर जोर दिया जाता है। इसके कई अपवाद हैं (दो की हम इस पाठ में समीक्षा करेंगे), परन्तु सावधान रहें कि किसी दृष्टांत की अति व्याज़्या करने से उसका अर्थ ही न बिगड़ जाए।[14] उदाहरण के लिए, इस पाठ के बाइबल पाठ में उस आदमी का दृष्टांत शामिल है जिसने गाड़ा हुआ धन ढूंढ़ने के लिए एक खेत मोल खरीदा था (मज़ी 13:44)। दृष्टांत में यह समझाया गया है कि राज्य अहम है, न कि यह कि उस आदमी के कामों की नकल की जाए (जो, संदेहपूर्ण थे)। पहले हमने दो कर्जदारों के दृष्टांत का अध्ययन किया था और ज़ोर दिया था कि परमेश्वर को उस समय के बेईमान साहूकारों से न मिलाया जाए। दो और उदाहरण उन पदों से हम देखेंगे, जिनका हम बाद में अध्ययन करेंगे: यदि हम हर बात को ''उचित'' ठहराने का प्रयास करें, तो लूका 12:39, 40 में यीशु के शज़्दों में हमें सुझाव मिलेगा कि परमेश्वर चोर है, और लूका 18:1-6 का दृष्टांत परमेश्वर को अधर्मी ठहरा देगा।

दृष्टांतों की व्याज़्या के कुछ और सिद्धान्तों को समझा जाना चाहिए। (1) अधिकतर दृष्टांत ''राज्य'' के दृष्टांत ही हैं (देखें मज़ी 13:24, 31, 33, 44, 45, 47)। उनका उद्देश्य राज्य के कुछ पहलुओं को प्रकट करना था, जिनमें राज्य के नागरिकों और कलीसिया के लोगों के व्यवहार का ढंग बताया गया था।[15] (2) दो दृष्टांतों में एक जैसी बातें होने पर आवश्यक नहीं कि दोनों का अर्थ एक ही हो। उदाहरण के लिए, बीज बोने वाले के दृष्टांत में, ''बीज तो परमेश्वर का वचन है'' (लूका 8:11), जबकि जंगली बीज के दृष्टांत में, बीज ''राज्य की सन्तान'' है (मज़ी 13:38)। (3) दृष्टांत अलंकार की भाषा है, इसलिए मूलत: वे नई सच्चाई को प्रकट करने के बजाय मूल सच्चाई की तस्वीर बनाते हैं। इसलिए ''किसी एक दृष्टांत की व्याज़्या से किसी धार्मिक शिक्षा को सिद्ध करने से परहेज़ रखना'' चाहिए।[16]

दृष्टांतों की इतनी ही पृष्ठभूमि काफी है। आइए ''व्यस्त दिन'' पर यीशु के कहे दृष्टांतों को देखते हैं।

दृष्टांतः उदाहरण (मत्ती 13:3-9, 18-33, 36-50; मरकुस 4:3-9, 14-20, 26-32; लूका 8:5-8, 11-15)

पता नहीं कि इस दिन कहे गए सभी दृष्टांत हमारे पास हैं या नहीं (मरकुस 4:2), परन्तु मत्ती ने कम से कम नौ दृष्टांतों के बारे में बताया है। मरकुस ने मत्ती वाले दृष्टांत ही बताए हैं, इसके साथ उसने एक और दृष्टांत बताया है जिसे मत्ती ने नहीं लिखा है। इनमें से केवल एक दृष्टांत जो लूका की पुस्तक में मिलता है, वह है बीज बोने वाले का दृष्टांत।

बीज बोने वाले का दृष्टांत (मत्ती 13:3-9, 18-23; मरकुस 4:3-9, 14-20; लूका 8:5-8, 11-15)

बीज बोने वाले का दृष्टांत अपने महत्व के कारण सुसमाचार के तीनों सहदर्शी विवरणों में मिलता है। यीशु ने अपने चेलों से पूछा कि ज़्या उन्हें इस दृष्टांत की समझ आ गई है, परन्तु उन्हें तो कोई भी दृष्टांत समझ नहीं आया था (मरकुस 4:13)। इससे सब दृष्टांतों की एक कुंजी मिल गई:[17] यह इस बात को समझने की कुंजी थी कि दृष्टांत ज़्यों आवश्यक हैं। यीशु को सुनने के लिए आने वालों में, अधिकतर नहीं तो कई लोग कठोर, सतही या विभाजित मनों वाले होते थे। यह विशेष दृष्टांत सामान्य तौर पर दृष्टांतों को समझने की एक कुंजी भी थी। मसीह के अनुयायियों को इस कहानी की व्याज़्या करने का ढंग सीखकर अन्य दृष्टांतों की व्याज़्या करना सीखने में सहायता मिलनी थी। अगले प्रवचन में बीज बोने वाले के दृष्टांत की विस्तार से समीक्षा की जाएगी, परन्तु यह इतना महत्वपूर्ण है कि अभी इस पर कुछ टिप्पणियां देना आवश्यक है।

यीशु ने समुद्र के किनारे चार किस्म की भूमि के बारे में बताकर अपनी शिक्षा देनी प्रारज़्भ की: मार्ग के किनारे[18] की भूमि, पथरीली भूमि, कंटीली झाड़ियों वाली भूमि और अच्छी भूमि।[19] दृष्टांत सुना देने के बाद,[20] लोगों के जाते ही उसके चेले उससे पूछने लगे कि इस दृष्टांत का ज़्या अर्थ है (मरकुस 4:10; लूका 8:9)।[21] उसने समझाया कि हर भूमि मन की स्थिति को दिखाती थी कि किस प्रकार मन वचन को ग्रहण करता है। केवल ''भले और अच्छे'' मन ही आत्मिक फल देने वाला जीवन बिताते हैं और बिताएंगे (लूका 8:15)।

हर रोज़, यीशु के आसपास चारों तरह के मन वाले लोग रहते थे। कठोर मन फरीसी यीशु को फंसाने के प्रयास में रहते थे। सतही मन वाली भीड़ मसीह की सेवकाई तथा उसके आश्चर्यकर्मों से उज़ेजित होती थी, परन्तु वे उसके उद्देश्य की वास्तविक प्रकृति को नहीं समझ पाते थे। कुछ यहूदा जैसे दोचिज़े लोग भी थे, जो माया के मोह में फंसे हुए थे (देखें यूहन्ना 12:6)। भले और अच्छे मन के लोग भी उसके आसपास रहते थे, जो उसके प्रयास को कामयाब करते थे।

यह समझाने में कि यहूदी अगुओं ने यीशु को ज़्यों ठुकराया, उसके चेलों में इस दृष्टांत ने एक व्यावहारिक उद्देश्य को पूरा किया। इसने आने वाले समय में भी अर्थात जब उन्होंने प्रचार आरज़्भ करना था, एक व्यावहारिक उद्देश्य पूरा करना था: इससे यह व्याज़्या होनी थी कि कुछ लोग सुसमाचार को ग्रहण करते और दूसरे ज़्यों नहीं करते हैं। इस दृष्टांत का संदेश आज भी उन लोगों के लिए, जो संसार में आज वचन की शिक्षा देते तथा प्रचार करते हैं, बड़ा महत्वपूर्ण है।

उगने वाले बीज का दृष्टांत (मरक़ुस 4:26-29)

मरकुस के अनुसार, बीज बोने वाले का दृष्टांत बताने के तुरन्त बाद, उसने उस बीज का दृष्टांत बताया, जो कटनी के समय तक चुप-चाप बढ़ता रहा।[22] यह आम कहानी है, जिसे फसल बोने वाला कोई भी जानता है कि वह बिन बोए कैसे बढ़ता है।[23] पिछले दृष्टांत की तरह ही इसमें भी हमें चाहिए कि हम भूमि मनुष्य के मन को और बीज को परमेश्वर का वचन मानें। यह दृष्टांत अवश्य ही चेलों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिया गया होगा:

- सुसमाचार अपना प्रभाव सुनने वालों के मनों पर अवश्य छोड़ता है, हमें पता चले या न चले।
- बीज को उगने और बड़ा होने में समय लगता है, सो हमें चाहिए कि धीरज से काम लें।
- यदि हम ईमानदारी से वचन को बोते रहें तो परमेश्वर अवश्य फल देगा (1 कुरिन्थियों 3:6)।

सैंतालीस वर्ष पूर्व जब मैं जे. डज़्ल्यू. रॉबर्ट्स की अगुआई में मसीह के जीवन का अध्ययन कर रहा था, तो भाई रॉबर्ट्स ने *गॉस्पल एडवोकेट* के सज़्पादक के बारे में बताया, जिन्होंने एक नई जगह, जहां मसीह की कलीसिया की मण्डली नहीं थी, सुसमाचार सभा की थी। तीन सप्ताह तक, उस प्रचारक ने इस उज़्मीद से कि बहुत से लोग प्रभु को ग्रहण करेंगे, जी जान से प्रचार किया। केवल एक बपतिस्मा हुआ, जो भूरे धज़्बों से भरे मुंह वाली एक लड़की का था। उस सुसमाचार प्रचारक ने निराश होने के लिए प्रचार नहीं किया था। परन्तु याद रखें कि बीज धीरे-धीरे उगता है, पर उगता अवश्य है। वह छोटी लड़की बड़ी हुई, उसकी शादी हुई, और उसके तीन लड़के हुए, और बड़े होकर तीनों प्रचारक बने। ''हम ... हियाव न छोड़ें, ज़्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे'' (गलातियों 6:9; देखें सभोपदेशक 11:6)।

जंगली बीज का दृष्टांत (मत्ती 13:24-30, 36-43)

यीशु ने बीज के बढ़ने का एक और दृष्टांत कहा: उसने एक शत्रु के बारे में बताया,

जिसने गेहूं बोए जाने के तुरन्त बाद जंगली बीज बो दिया। जंगली बीज देखने में बिल्कुल गेहूं के बीज जैसा ही लगता था, विशेष कर तब जब दोनों उग रहे थे।[24] जब नौकरों का ध्यान उस विनाशकारी बीज पर पड़ा तो उन्होंने अपने मालिक से जाकर पूछा कि ज़्या वे उस बीज को निकाल दें। तब तक छोटे-छोटे पौधों की जड़ें आपस में एक-दूसरे से जुड़ चुकी थीं, सो मालिक ने कहा, ''नहीं, ऐसा न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए उनके साथ गेहूं भी उज़ाड़ लो'' (मज़ी 13:29)। उसने उन्हें कटनी तक बढ़ने देने का आदेश दिया, ताकि तब उन्हें आसानी से पहचान कर अलग किया जा सके (आयत 30)।

बाद में चेलों ने यीशु से इस दृष्टांत का अर्थ बताने के लिए कहा (आयत 36)। उसने समझाया कि शत्रु शैतान है, और कटनी संसार के अन्त का समय है (आयत 39)। इस शृंखला में न्याय के अन्तिम दिन से सज़्बन्धित दो दृष्टांत हैं, जिनमें से एक यह है।[25] 39 से 43 आयतों में द्वितीय आगमन तथा उसके बाद होने वाले न्याय की स्पष्ट तस्वीर दिखाई गई है।

कुछ लोगों ने यह कह कर कि इसमें हमें दुष्ट कर्मियों को अपनी संगति से निकालने का प्रयास न करने की बात सिखाई गई है, इस दृष्टांत को कलीसिया के अनुशासन पर लागू करने की कोशिश की है। ऐसी व्याज़्या से स्वयं यीशु में ही विरोधाभास हो जाएगा (मज़ी 18:15-18; 1 कुरिन्थियों 5:4, 5, 11, 13ख भी देखें)। जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे ने लिखा है, ''उस दृष्टांत को और इसकी व्याज़्या को कभी-कभी कलीसिया के अनुशासन के विरुद्ध एक दलील बनाया जाता है, परन्तु इनका इस प्रकार इस्तेमाल स्पष्ट रूप से भ्रमित करने वाला है। खेत कलीसिया को नहीं, बल्कि संसार को कहा गया है और दृष्टांत की शिक्षा यह है कि हमें दुष्ट लोगों को पूरी तरह से नष्ट करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।''[26] जॉन कार्टर मानता था, ''... 'राज्य की सन्तान' और 'दुष्ट की सन्तान' को संसार में जगत के अन्त तक इकट्ठे रहना होगा। बहुत साफ है कि [दृष्टांत] किसी कलीसिया को अनियमित सदस्यों या अविश्वासियों की तरह रहने वाले सदस्यों की सदस्यता बरकरार रखने का आदेश नहीं है।''[27]

शायद यह दृष्टांत चेलों को यह समझने में सहायता करने के लिए दिया गया कि इतने सारे लोग सुसमाचार को ग्रहण ज़्यों नहीं करते, ज़्योंकि उनका शत्रु, शैतान कार्य कर रहा है। इससे उन्हें अपने काम के लज़्बे समय तक रहने का भी पता चल गया होगा।

राई के बीज और खमीर के दृष्टांत (मज़ी 13:31-33; मरकुस 4:30-32)[28]

जहां तक बाइबल बताती है, उस दिन कहे गए बाकी दृष्टांत बहुत ही संक्षिप्त थे और उनकी व्याज़्या नहीं की गई थी। इनमें से पहला दृष्टांत बढ़ने वाले बीज अर्थात राई के बीज का दृष्टांत था। यहां बीज की तुलना उससे बनने वाले पौधे से की गई। राई का बीज बहुत ही छोटा था,[29] पर उससे बनने वाला पौधा बहुत बड़ा।[30] एक बार फिर, सज़्भवतया यह चेलों को प्रोत्साहित करने के लिए कहा गया था: यद्यपि मसीह की लहर आरज़्भ में बहुत छोटी थी, परन्तु बोने का कार्य निष्ठापूर्वक करने पर इसने बढ़कर इतना बड़ा हो जाना था, जिसकी वे स्वप्न में ज़ी कल्पना नहीं कर सकते थे। इस दृष्टांत की सच्चाई आज अफ़्रीका

और भारत जैसे देशों में देखी जा सकती है।

अगले दृष्टांत में (खमीर का दृष्टांत), दृश्य खेत में बीज बोने वाले किसान से अपने परिवार के लिए ब्रैड बनाने वाली स्त्री की ओर आ गया। जो लोग ब्रैड बनाने की प्रक्रिया के बारे में नहीं जानते हैं,[31] उनके लिए बता देना उचित है कि ब्रैड बनाने के समय स्त्रियां गूंधे हुए आटे में से थोड़ा सा आटा लेकर गरम जगह पर रख देती थीं। अगली बार ब्रैड बनाने के लिए वे उस आटे को गूंधे हुए आटे में डाल कर उसे एक ओर रख देती थीं। वह खमीर फैल कर सारे आटे को खमीरा बना देता, जिससे सारा आटा फूल जाता। अगली बार के लिए फिर उसमें से थोड़ा सा आटा निकाल कर रख लेतीं। कुछ समय बाद, वह थोड़ा सा खमीर सैकड़ों-हज़ारों रोटियों के आटे को खमीर बना देता था।

यद्यपि अलग रूपक का इस्तेमाल किया गया, परन्तु संदेश मूलत: राई के बीज के दृष्टांत वाला ही था कि वचन में स्वयं इतनी सामर्थ है कि यह फैल कर बढ़ सकता है।[32] यह सच्चाई उन लोगों के लिए उत्साहवर्धक है, जो सुसमाचार को फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। इसका उन लोगों के लिए विशेष महत्व है, जो *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के साथ जुड़ कर काम करते हैं।

छिपे हुए खज़ाने और अनमोल मोती के दृष्टांत (मत्ती 13:44-46)

मत्ती 13 अध्याय के शेष दृष्टांत चेलों को अकेले में कहे गए हो सकते हैं (आयत 36)। इनमें से पहले दोनों साथ-साथ हैं: दोनों ही ऐसे आदमियों के बारे में हैं, जिन्होंने कोई बहुमूल्य वस्तु रखी। एक को अचानक खेत में से धन मिला (आयत 44), जबकि दूसरे को ऐसा मोती मिला, जिसकी खोज में वह लम्बे समय से था (आयतें 45, 46)।[33] दोनों ही दृष्टांतों में आदमी उस धन का महत्व समझता है और उसे पाने के लिए ऊंची कीमत चुकाता है। इन दृष्टांतों से कई शिक्षाएं मिल सकती हैं, परन्तु एक उद्देश्य स्पष्ट था, और वह था यीशु के चेलों को उत्साहित करना। उनके सामने जो चुनौती थी, वह इतनी महत्वपूर्ण थी कि इसके लिए कोई भी बलिदान बड़ा नहीं था।

जाल का दृष्टांत (मत्ती 13:47-50)

दृष्टांतों की शृंखला गलील की झील में उस जाल की कहानी के साथ खत्म होती है, जिसमें अच्छी और निकम्मी सब प्रकार की मछलियां आ गईं। यहूदी लोगों ने "अच्छी" और "निकम्मी" सुना होगा तो तुरन्त उनके मन में "शुद्ध" और "अशुद्ध" का विचार आ गया होगा। व्यवस्था के अनुसार उन्हें पंखों और चोंयटों वाली मछली खाने की ही अनुमति थी (लैव्यव्यवस्था 11:9-12)। ज़्योंकि जाल में शुद्ध और अशुद्ध सब प्रकार की मछलियां आ गई थीं, इसलिए मछुआरों के लिए खाने योग्य तथा न खाई जा सकने वाली मछलियों को छांटना आवश्यक था। यीशु ने इस छांटने को अन्तिम न्याय की प्रक्रिया से मिलाया। इस अर्थ में, यह दृष्टांत जंगली बीज के दृष्टांत की तरह ही है। इसमें भी चेलों के लिए अतिरिज़्त सबक हो सकता है। यीशु ने कहा था, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के

पकड़ने वाले बनाऊंगा'' (मत्ती 4:19)। अब, शायद वह उन्हें बता रहा था, कि अपनी शिक्षा से इतनी मछलियां ''ज़ींचने पर'' वे हैरान न हों।

सारांश

उस दिन यीशु ने कम से कम दो अन्य उदाहरणों का इस्तेमाल किया, जिन्हें सामान्यतया दृष्टांतों की श्रेणी में रखा जाता है: पैमाने पर रखे दीये का हवाला (मरकुस 4:21, 22; लूका 8:16, 17) और एक व्यक्ति द्वारा अपने भण्डार में से नई और पुरानी वस्तुओं को निकालने का उदाहरण (मत्ती 13:52)। परन्तु हमें अब यह पाठ यहीं समाप्त करना होगा। अगले पाठ में, गलील की झील के पार जाने के यीशु के सफर तथा उस सफर के जोखिमों का अध्ययन करते हुए हम ''व्यस्त दिन'' की अपनी समीक्षा समाप्त करेंगे।

दृष्टांत कह लेने के बाद यीशु ने अपने चेलों से एक प्रश्न पूछा। उनके जवाब से मुझे हंसी आती है। उसने पूछा था, ''क्या तुम ने ये सब बातें समझीं?'' और उनका जवाब था, ''हां'' (मत्ती 13:51)। हो सकता है कि वे थोड़ा-बहुत समझ गए हों, पर बाद की घटनाओं से संकेत मिलता है कि उन्हें अभी तक पूरी समझ नहीं आई थी। यदि मुझे और आपको इस पाठ से और इस शृंखला के पाठों से लाभ उठाना है तो हमें प्रभु की इन आज्ञाओं पर ध्यान देना होगा: ''चौकस रहो कि *क्या* सुनते हो'' (मरकुस 4:24) और ''चौकस रहो कि *किस रीति से* सुनते हो'' (लूका 8:18)। ''जिस के पास सुनने के लिए कान हों वह सुन ले'' (मरकुस 4:9; देखें आयत 23)।

टिप्पणियां

[1]कुल मिलाकर दृष्टांतों के तीन ''बड़े समूह'' हैं। दूसरा समूह लूका 15:1-16:31 में मिलता है। तीसरा समूह मत्ती 21:23-22:14 तथा मरकुस और लूका में उससे सम्बन्धित पदों में मिलता है। [2]अधिकतर लोग सहमत हैं कि दो कर्ज़दारों की कहानी दृष्टांत ही है, यद्यपि बाइबल में इसे ''दृष्टांत'' नहीं कहा गया। [3]प्रभु द्वारा प्रयुक्त अन्य उदाहरणों को भी ''दृष्टांत'' कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए, मत्ती 11:16-19 को दृष्टांत की श्रेणी में रखा जा सकता है। [4]''बिना दृष्टांत के वह उनसे कुछ न कहता था,'' कथन का मुख्य ज़ोर इस समय गलील सागर के किनारे, दी गई यीशु की शिक्षा के विषय में है। इसके बाद, यीशु दृष्टांतों के अलावा अन्य ढंगों का इस्तेमाल कर भीड़ से बात करता था। तौभी, समय-समय पर, उसकी शिक्षा में दृष्टांतों की अधिक से अधिक भूमिका रही है। [5]भजन संहिता 78:2 हमारे इस पाठ (मत्ती 13:35) में उद्धृत किया गया है। भजन लिखने वाले आसाप ने जो कुछ कहा, वह बाद में यीशु के काम से मेल खाता था। [6]जे.डब्ल्यू. मैज़गर्वे और फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर. ए. हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 338। [7]एफ़लेगर्ड स्मिथ *द नैरेटड बाइबल इन क्रोनोलॉजिक ऑर्डर* (यूजीन,ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पब्लिशर्स, 1984), 1394। [8]एच.आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रेस, 1963), 147। हेस्टर ने एक अंग्रेज़ प्रचारक, लेखक तथा कैम्ब्रिज में प्रोफेसर विलियम सैंडे (1843-1920) को उद्धृत किया। [9] ''हरमिन्यूटिक्स'' पवित्र शास्त्र की व्याख्या के सिद्धान्तों को कहा जाता है। [10]यह एक रूपक जिसे ''विस्तृत अलंकार'' के रूप में परिभाषित किया जाता है, के विपरीत है। अलंकार एक तुलना है जो ''की तरह'' या ''जैसे'' शब्द को व्यवहार में नहीं लाता।

[11]नए नियम में ''दृष्टांत'' शब्द का व्यापक इस्तेमाल होने के कारण, यीशु के दृष्टांतों की दो सूचियां ढूंढ़ना कठिन है जो आपस में पूरी तरह से सहमत हों। [12]हम कहावत को ''लोकोक्ति'' कहेंगे, परन्तु यूनानी शास्त्र में *parabole* (''parable'') है। [13]साधारणतया, यीशु के दृष्टांत उसके सुनने वालों के परिवारों तथा काम में पेश आने वाली प्रतिदिन की घटनाओं के बारे में हैं। कभी, वह कम प्रसिद्ध दृष्टांत का इस्तेमाल करता था, जैसे दुष्ट आत्माओं का संसार (लूका 11:24-26) या मृतकों की स्थिति (लूका 16:19-31), परन्तु किसी भी दृष्टांत को ''परी कथा'' के रूप में नहीं मानना चाहिए। सब दृष्टांत *वास्तविकता* के आधार पर थे। [14]हम में से जो लोग प्रचार करते हैं, वे सम्भवतया इस बात में किसी से भी अधिक दोषी हैं। [15]''मसीह का जीवन, भाग 1'' पुस्तक में ''स्वर्ग का राज्य'' पाठ देखें। [16]जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविले: ब्रॉडमैन प्रेस, 1961), 89। [17]किसी ने इसे ''दृष्टांतों के बारे में दृष्टांत'' का नाम दिया है। [18]मैं अपने प्रवचन में इसी वाक्यांश का इस्तेमाल करूंगा। [19]क्योंकि दृष्टांत में भूमि पर ज़ोर दिया गया है न कि बीज बोने वाले पर, इसलिए टीकाकारों का सुझाव है कि इसे ''अलग-अलग भूमि का दृष्टांत'' कहा जा सकता है। परन्तु यीशु ने कहा, ''... बोने वाले के दृष्टांत ... सुनो'' (मत्ती 13:18), सो हम उसी पदनाम का इस्तेमाल कर रहे हैं। [20]यद्यपि बीज बोने वाले के दृष्टांत का अर्थ दृष्टांत के तुरंत बाद बताया गया, यीशु ने सम्भवतया अपने और अपने चेलों के भीड़ से अलग होने से पहले अपने दृष्टांतात्मक प्रवचन को पूरा कर लिया था। उस समय, उसने स्पष्टतया बीज बोने वाले के दृष्टांत और जंगली बीज के दृष्टांत का अर्थ समझाया था और कुछ अन्य दृष्टांत जोड़ दिए, जो केवल चेलों के लिए थे।

[21]यद्यपि बाइबल केवल दो दृष्टांतों की ही विस्तृत व्याख्या देती है (बीज बोने वाले का दृष्टांत और जंगली बीज का दृष्टांत), मरकुस 4:34 कहता है कि यीशु ''अपने निज चेलों को सब बातों का अर्थ बताता था।'' [22]इस दृष्टांत को कई बार ''अपने आप बढ़ने वाले बीज का दृष्टांत'' कहा जाता है। [23]अनाज के अधिकतर खेत बोने और काटने के बीच के समय सुधारे नहीं जाते। उनमें इस दौरान पानी और खाद डाली जा सकती है, परन्तु सुधारने के किसी भी प्रयास से पौधों की जड़ें हिल जाएंगी। [24]मेरे पास जो NASB की प्रति है, उसमें ''जंगली बीज'' पर यह टिप्पणी है: ''या *डरनेल अर्थात गेहूं जैसा एक जंगली दाना।*'' [25]दूसरा दृष्टांत जाल का है। [26]मैज़्गर्वे पैंडलटन, 339। [27]कार्टर, 132। [28]दृष्टांतों की इस शृंज़ला में कई जोड़े इकट्ठे मेल खाते हैं; यह उनमें से एक है। [29]यीशु की बात कि राई का बीज, ''सब बीजों से छोटा होता है,'' उस समय तथा स्थान पर लागू होता है, अन्य समयों तथा स्थानों पर लागू होना आवश्यक नहीं है। यदि आप जहां रहते हैं, वहां से राई का बीज खरीद सकते हों, तो आपको चाहिए कि खरीदकर अपने सुनने वालों को दिखाएं कि यह बीज कितना छोटा होता है। [30] पुन:, उस समय तथा स्थान के राई के पौधे पर विचार करें, आवश्यक नहीं कि यह वैसा ही हो जैसा आपके इलाके में पाया जाता है। जे.डज़्ल्यू.राबर्ट्स ने अपनी ज़्लास को बताया कि यीशु द्वारा बताए गए राई के पौधे घोड़े पर बैठे आदमी के जितने ऊंचे होते थे।

[31]उस जमाने में पैक की हुई ब्रैड और घर में बनाने के लिए मशीनें खरीदी नहीं जा सकती थीं। [32]साधारणतया किसी बुरे प्रभाव को समझाने के लिए, नए नियम में खमीर का इस्तेमाल बुरे अर्थ में किया जाता है (मत्ती 16:6; 1 कुरिन्थियों 5:6-8; गलतियों 5:9)। राई के बीज और खमीर का दृष्टांत दोनों ही बुराई के भीतर तक असर के विरुद्ध चेलों को चेतावनी हो सकते हैं। तौ भी, संदर्भ में दोनों दृष्टांतों का दृष्टिकोण सकारात्मक लगता है। [33]आप उदाहरण देना चाहें तो दे सकते हैं कि किस प्रकार कुछ लोगों को सुसमाचार का ''भण्डार'' अचानक और कइयों को खूब ढूढ़ने पर मिलता है। शायद लोगों को सच्चाई मिलने का सबसे प्रचलित ढंग यह है कि उन्हें किसी मित्र या साथी की संगति के द्वारा अचानक मिल जाता है, जब वे इसे ढूंढ़ नहीं रहे होते।